शोध मंथन Vol. XV No.IV Oct.- Dec. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

शिक्षा, समाज और सोशल मीडियाः अवसर एवं चुनौतियाँ

प्राप्तिः 10.11.2024
स्वीकृतः 26.12.2024

डॉ० संजीव कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)
हिन्दू कॉलिज, मुरादाबाद
sanjeev.sanjeev.rana1@gmail.com

86

सारांश

यह सदी इन्टरनेट एवं सोशल मीडिया के युग की सदी है। सम्पूर्ण विश्व की युवा जनसंख्या सोशल मीडिया में बेहद दिलचस्पी ले रही है, जहाँ पर उनका एक 'आभासी दुनिया' विद्यमान है और यहाँ पर वे बेखौफ अपने भावों, विचारों, अभिरूचियों एवं सूचनाओं का आदान–प्रदान कर रहे है। आज स्थिति यह है कि विकसित देशों की 50 प्रतिशत जनसंख्या को यह याद नहीं है कि इन्टरनेट से पहले का जीवन कैसा था। यह सब मानव सभ्यता के इतिहास में इससे पहले कभी नहीं हुआ। सोशल मीडिया के उपयोग ने रचनात्मकता, उत्कष्टता, गति और सहभागिता से हमारा परिचय कराया है साथ ही शिक्षण अधिगम में मनोरंजन का तत्व जोड़ा हैं तो दूसरी ओर इसने ऐसे समाज विरोधी दैत्यों को भी जन्म दिया है जो इसके माध्यम से घष्णा, अलगाववादी, धार्मिक कटटरता, जैसे अनुचित, समाज विरोधी एवं अप्रमाणित सूचनाओं एवं सामग्री का प्रसार करते है जिससे समाज में अस्थिता कर खतरा उत्पन्न हो जाता है। परन्तु यह भी सत्य है कि सोशल मीडिया ने इन्टरनेट का लोकतान्त्रिकरण किया है और इससे भी बढ़कर अभिव्यक्ति की आजादी को संरक्षित किया है। सोशल मीडिया के आगमन, विकास एवं अत्यधिक उपयोग के कारण विश्वभर में सोशल मीडिया और शिक्षा के विषय की खोजकी प्रवृत्ति बढ़ी है। यह आलेख इसी दिशा में सोशल मीडिया शिक्षा एवं समाज के सम्बन्धों के विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

प्रस्तावना

आज हम *'सूचना युग'* में रह रहे है जिसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हम किसी भी स्थान पर, किसी भी समय में निर्बाध रूप से सूचनाओं का आदान–प्रदान कर सकते है। जिसका आधार इन्टरनेट की 'आभासी दुनिया' है, जहाँ पर किसी भी विषय से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की सूचना को मात्र कुछ ही पलों में दुनिया के किसी भी कोने में भेजा सकता है अथवा प्राप्त किया जा सकता है। सोशल मीडिया वास्तविक दुनिया के समान्तर ऐसी 'आभासी दुनिया' है जहाँ पर कभी रात नहीं होती है। अब लोगों की आपसी मुलाकाते, बातचीत एवं वाद–विवाद अपने मौहल्ले के चौराहे अथवा गली के नुक्कड़ पर नहीं वरन् फेसबुक, एक्स, लिंक्डइन, माइस्पेस अथवा इसी प्रकार की अन्य साइड्स पर होती है। सम्पूर्ण विश्व इन साइट्स के प्रयोग का अभ्यस्त हो गया है। सोशल मीडिया

इन्टरनेट की प्राथमिक गतिविधि बन गया है जहां पर यह सभी आयु वर्ग के द्वारा सर्वाधिक उपयोग किया जाने वाला साधन बन गया है लेकिन युवा वर्ग विशेष रूप से छात्रों के बीच लत की हद तक लोकप्रिय हो चुका है। आज विश्व में 5.19 (जनवरी, 2024) अरब लोग सोशल मीडिया का उपयोग करते है, इनमें से लगभग 10 करोड़ लोगों को इसकी लत लग चुकी है। यद्यपि यह सत्य है कि सोशल मीडिया ने समाज के शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं धार्मिक पक्षों पर गहरा एवं स्थायी प्रभाव डाला है, जहाँ पर यह नये आर्थिक, शैक्षिक एवं व्यवसायिक अवसर लेकर आया है, वहीं इसका स्याह पक्ष भी है। यह प्रतिदिन हमारा बहुत सारा समय निगलता जा रहा है। यह हमारे सामाजिक, पारिवारिक रिश्तों को हमारे मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को निगल रहा है। साथ ही समाज में घृणा, अश्लीलता, संघर्ष व हिंसा फैलाने का मुख्य साधन बन गया है। यह युवा वर्ग के नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के साथ–साथ उनकी जीवन शैली एवं विचारों को प्रभावित कर रहा है। सोशल मीडिया की दुनिया को युवा मन वास्तविक दुनिया से अधिक महत्व देने लगा है।

सोशल मीडिया का अर्थ

तकनीकी अर्थ में सोशल मीडिया इन्टरनेट आधारित अनुप्रयोगों का एक ऐसा समूह है, जो प्रयोक्ता जनित सामग्री के सर्जन एवं आदान–प्रदान की अनुमति देता है। इसके अतिरिक्त यह स्मार्टफोन एवं वेब आधारित प्रौद्योगिकी से ऐसे क्रियाशील मंचों का निर्माण करता है जिसके माध्यम से व्यक्ति और समुदाय प्रयोक्ता जनित सामग्री का सम्प्रेषण एवं सह सर्जन कर सकते है, उस पर विचार–विमर्श कर सकते है और उसका परिष्कार कर सकते है।

एड्रियांस कॉपलान और *माइकल हैनरिक* ने सोशल मीडिया को *''वैब निर्मित एप्स की भीड'* के रूप में वर्णित किया है जो वेब यान्त्रिकी की नींव के आधार पर एक विचारधारा बनाते है। यह एक अभासी दुनिया है जिसने तकनीकी के विकास के साथ–साथ व्यक्ति की दिनचर्या में शामिल होकर उसको आदी बना दिया है। अब यह संगठनों, समुदायों एवं व्यक्तियों के बीच विश्व में महत्वपूर्ण एवं व्यापक परिवर्तनों को अंजाम देता है।

उत्पत्ति एवं उपभोक्ता

इन्टरनेट पर आधारित प्रारम्भिक सामाजिक नेटवर्किंग ऑनलाइन समुदायों के रूप में हुई थी। जैसे– जीयोसिटीज (1994), द ग्लोबल (1994), ट्राईपॉड (1995)। इनमें ऑनलाइन समुदायों में लोगों को निकट सम्पर्क मे लाने के लिए 'चैट रूम' उपलब्ध कराये जाते थे। परन्तु सामाजिक नेटवर्किंग में नये तरीके 1990 के अंत तक विकसित होने शुरू हुए जिसकी नई पीढ़ी 2002 में फ्रेंडस्टर साइट के शुरू होने के साथ ही विकसित होने लगी और जल्दी ही इन्टरनेट की मुख्यधारा का हिस्सा बन गई फ्रेंडस्टर के एक वर्ष बाद ही सोशल साइट 'माइस्पेस' एवं इसके बाद एक वर्ष बाद 'लिंक्डडन' आयी जो आते ही चर्चित हो गयी। इन साइट की लोकप्रियता का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि 2005 में 'माइस्पेस' के देखे जाने वाले पेजों की संख्या गूगल से अधिक थी। इसी क्रम में 4 फरवरी 2004 को फेसबुक की शुरूआत हुई थी जो आज विश्व की सबसे बडी 'सोशल साइट' है इसके उपयोगकर्त्ताओं की संख्या 3 बिलियन से अधिक हो गयी। इसका अर्थ है कि विश्व की लगभग 37 प्रतिशत आबादी फेसबुक उपयोगकर्त्ता है।

दर असल 21वीं सदी के प्रथम दशक में साफ्टवेयर विकासकर्त्ताओं ने अन्तिम उपयोगकर्त्ताओं को इस बात में सक्षम बना दिया कि वे वर्ल्ड वाइड वेब पर स्थिर एवं निष्क्रिय पृष्ठों को देखने के बजाए परस्पर अधिक क्रियाशील बन सकें व ऑनलाइन समुदायों में प्रयोक्ता जनित सामग्री का इस्तेमाल कर सकें। इसकी परिणीति वेब 2.0 के रूप में हुई और सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि इससे एक अद्‌भूत प्रयोग का जन्म हुआ जिसे अब हम *सोशल मीडिया* कहते हैं।

सोशल मीडिया ने विश्व के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कषतिक, धार्मिक राजनीतिक एवं शैक्षिक पक्षों में गम्भीर एवं प्रभावी हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया है। इसकी यह हैसियत इसके उपयोगकर्त्ताओं की वजह से है। विश्व में सोशल मीडिया का उपयोग करने वालों की संख्या इसका उपयोग न करने वालों से अधिक हो गयी है। ऑनलाईन वेबसाइट 'डेटा रिपोर्टल' की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की आबादी लगभग 7.80 अरब है जिसमें से 5.19 अरब लोग सोशल मीडिया का उपयोग करते है। यह विश्व की कुल आबादी का 64.5 प्रतिशत है। विश्व में प्रत्येक सेकेन्ड 12 यूजर्स सोशल मीडिया से जुड़ते है। विश्व भर में सोशल मीडिया पर यूजर्स प्रतिदिन औसत 2.30 घंटे बिताता है। विश्व के सभी यूजर्स के समय को यदि जोड़ लिया जाए तो प्रत्येक दिन 10 लाख साल के बराबर समय सिर्फ सोशल मीडिया पर खर्च हो जाता है। इन तथ्यों से विश्व में सोशल मीडिया के प्रभाव का अंदाजा लगाया जा सकता है।

समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव

सोशल मीडिया दुनियाभर में महत्वपूर्ण सामाजीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन का मुख्य माध्यम बन रहा है। सोशल मीडिया लोगों को जागरूक करता है और समाचार व समुदायिक मामलों में उनके ज्ञान को बढ़ाता है। इसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों जैसे राजनीति, धर्म, युद्ध, विज्ञान, वित्त, संस्कषति, खेल, फैशन, तकनीकी, अपराध, हिंसा, शिक्षा, व्यवसाय एवं प्रबन्धन आदि के बारे में जानकारी विभिन्न प्लेटफार्म के माध्यम से प्राप्त कर रहे है। सोशल मीडिया ने समाज को एक साथ साकारात्मक एवं नाकारात्मक दो स्तरों पर प्रभावित किया है।

साकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया ने वास्तव में इन्टरनेट का लोकतान्त्रिकरण किया है। इसने बचपन के बिछड़े साथियों, दोस्तों, रिश्तेदारों व जीवनयापन के कारण दूर गये परिवारजनों के बीच दूरियों को समाप्त करके हर समय सम्पर्क की सुविधा प्रदान करके निकटता का एहसास कराया है। साथ ही राष्ट्र एवं विश्व की राजनीतिक, सामाजिक, कला, विज्ञान तकनीकी, खेल, मनोरंजन एवं शैक्षिक क्षेत्र की हस्तियों से जुड़ने की सुविधा प्रदान की है, जहाँ हम उनके विचारों का एवं उन तक हमारे विचारों का आसानी से आदान–प्रदान कर सकते है। समाज पर सोशल मीडिया के प्रभाव को निम्न के माध्यम से समझ सकते हैं–

1. सोशल मीडिया पर हम अपने समानधर्मी लोगों का मंच बना सकते है।
2. सोशल मीडिया ने मानव को आपसी संवाद, अन्तःक्रिया व विचार साझा करने की सुविधा को चमत्कारिक रूप से असीम क्षेत्र प्रदान किया है इसके द्वारा मात्र कुछ ही सेकेण्ड्स में सम्पूर्ण पृथ्वी पर मानव आपको लाइव देख सकता है।

3. सोशल मीडिया लोकतान्त्रिक भागीदारी को बढ़ाता है, यह लोगों को अन्य लोगों के संगठनों से जुड़ने, उनके साथ अपना संगठन बनाने के अवसर प्रदान करता है, इससे व्यक्तियों की नेतृत्व क्षमता का विकास होता है।
4. जनमत तैयार करने, विभिन्न क्षेत्रों एवं संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोड़ने, भागीदार बनाने एवं नये ढंग से सम्पर्क करने में सोशल मीडिया एक बेजोड़ व सशक्त भूमिका का निर्वहन करता है।

नाकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया ने मानव सभ्यता की अनेक पुरानी समस्याओं को हवा दी है। वहीं कुछ नई समस्याओं को जन्म दिया है। समाजशास्त्री मानते है कि जैसे–जैसे व्यक्तियों का सामाजिक दायरा बढ़ता जाता है तो उनके दृष्टिकोण में खुलापन आता है और वे अपनी सोच व पूर्वाग्रहों से निकलकर व्यापक सामाजिक सरोकारों को समझना शुरू करते है। सोशल मीडिया ने लोगों के सामाजिक दायरे का विस्तार किया है, परन्तु यह देखा गया है कि पिछले कुछ समय में सोशल मीडिया ने पूर्वाग्रहों को मजबूत किया है। सोशल मीडिया ने नफरत, घृणा, विद्वेष की राजनीति को बढ़ावा ही नहीं दिया है वरन् एक नई तरह की उग्रता दी है। आज पूरी दुनिया में सोशल मीडिया पर झूठ एवं अवास्तविकता का बोलबाला है।

दुनियाभर में 21वीं सदी के दूसरे दशक में पैदा होने वाली पीढ़ी की वास्तविकता चिन्तित करने वाली है। जिसकी चर्चा नहीं हो रही है। 'इन्डियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक' ने अपनी हालिया रिपोर्ट में चौंकाने वाले आंकड़े प्रस्तुत किये है। भारत में इस पीढ़ी के नवजात शिशुओं को औसतन दस माह के अन्दर ही स्मार्टफोन (96 प्रतिशत), टीवी स्क्रीन (89 प्रतिशत) से पहला 'एक्सपोजर' हो जाता है। इस रिपोर्ट के अनुसार स्क्रीन टाईम बढ़ने से बच्चों की नींद की अवधि एवं गुणवत्ता बुरी तरह प्रभावित हो रही है। बच्चों में मोटापा व मायोपिया की समस्या बढ़ी है। यही नहीं स्क्रीन टाइम बढ़ने से सबसे अधिक बुरा असर बच्चों के संज्ञानात्मक विकास पर पड़ा है। उनके सीखने की प्राकृतिक गति एवं उनकी भाषा दोनों खत्म हो रही है। बच्चों का व्यवहार आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है एवं उनकी सहनशीलता खत्म होती जा रही है। स्मार्टफोन का अधिक प्रयोग बच्चों से न केवल उनका हंसता खेलता बचपन छीन रहा है अपितु उनको बीमार भी बना रहा है।

1. सोशल मीडिया की वजह से लोगों के बीच दूरियाँ बनी है। लोग घूमते फिरते, साथ के लोग से बातचीत करते समय, स्मार्टफोन में व्यस्त रहना ज्यादा पसन्द करने लगे है। इसकी वजह से लोग चिडचिड़ापन एवं अवसाद जैसी मानसिक बीमारियों की चपेट में आ रहे है।
2. सोशल मीडिया 'सूचना क्रान्ति के युग' में राष्ट्र विरोधी, हिंसात्मक, समाजविरोधी एवं आतंकी विचारों एवं गतिविधियों का तेजी से प्रसार करता है जो गम्भीर सामाजिक उन्माद का कारण बन सकता है।
3. सोशल मीडिया ने जीवन के हर पक्ष को प्रभावित किया है। इसके माध्यम से जहाँ हमें नवीन ज्ञान व सूचनाओं का पता चलता है वहीं नवीन परम्पराओं व नई समस्याओं का प्रादुर्भाव भी हुआ जिससे समाज में सामाजिक, सांस्कषतिक व नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है।

शिक्षा पर सोशल मीडिया का प्रभाव

21वीं सदी में इन्टरनेट आधारित सोशल मीडिया की प्रौद्योगिकी शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र एवं नाटकीय परिवर्तन ला रही है। शिक्षण संस्थान शिक्षण के पारम्परिक माध्यम से हटकर अधिक परिष्कृत पद्धतियों की ओर जा रहे है। शिक्षा में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने की प्रक्रिया विकसित हो रही है, क्योंकि अब शिक्षा कलम और कागज के इर्द–गिर्द नहीं घुमती हैं। इन सब परिवर्तनों का वाहक बना है सोशल मीडिया आधारित एप्स जिसने शिक्षा में वर्जचुअल शिक्षण को बढ़ावा दिया हैं।

साकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया पर विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित सन्देश एवं सूचनाएँ, आडियों, वीडियो, पोस्ट मित्रों द्वारा या सोशल मीडिया पर अनुसरण करने वाले लोगों द्वारा साझा की जा सकती है। इस कारण अनिच्छुक व्यक्ति भी समसामयिक घटनाओं के बारे में जान सकते है अथवा जानबूझकर ज्ञान प्राप्त किये बिना अपडेट प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार सोशल मीडिया 'निष्क्रिय अधिगम' की सम्भावनाओं को बढ़ाता है।

1. पारम्परिक शिक्षा के एक अंग के रूप में सोशल मीड़िया छात्रों के लिए आकर्षण पैदा करती हैं यह अधिगम प्रक्रिया में भागीदारी को प्रोत्साहित करके सहभागिता अध्ययन एवं सामाजिक अन्तः क्रिया को बढ़ावा देती है।
2. सोशल मीडिया अभिभावकों, शिक्षकों एवं छात्रों को 'स्मार्ट कक्षाओं' के माध्यम से एक दूसरे के साथ मजबूत एवं प्रभावी सम्प्रेषण करने में सक्षम बनाता है और टीमवर्क का प्रबन्ध करने की क्षमता का विकास करता है।
3. सोशल मीडिया पर उपलब्ध विभिन्न उपकरणों (Tools के प्रयोग द्वारा छात्र अपनी अधिगम शैली के अनुरूप सर्वोत्तम रूप से मिश्रण मिलान कर अपनी शैक्षिक उपलबिध को बढ़ा सकते हैं।
4. सोशल मीड़िया प्लेटफॉर्म पर आयोजित की जाने वाली कक्षाएँ अधिक अनुशासित व संरक्षित होती है, क्योंकि हम जानते है कि हमें हर कोई देख रहा होता है।
5. सोशल मीड़िया ने छात्रों के लिए जानकारी तक पहुँचना, साझा करना, उत्तर प्राप्त करना, एवं अध्यापनों से जुड़ना आसान बनाया है।
6. इसके उपयोग द्वारा अध्यापक अपने व्याख्यान ऑनलाइन वीडियों के माध्यम से अथवा रिकॉर्डिंग को अपलोड़ करके दे रहे है। इससे छात्रों को घर बैठकर सीखना आसान हो गया है।
7. यह अध्यापकों को अपनी सम्भावनाओं, कौशलों, अन्वेषण एवं ज्ञान का विस्तार करने के अवसर प्रदान करता है।
8. सोशल मीड़िया के आर्विभाव ने शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को गति प्रदान की है। इसके द्वारा पठन–पाठन के अनुभवों में नया मोड़ आया है। यह सीखने के साधन विविध रूपों में उपलब्ध कराता है जहाँ पर शिक्षक व विषय विशेषज्ञ अपने अनुभवों को सर्वोत्तम रूप से साझा करते हैं।
9. इसके उपयोग द्वारा शिक्षक कक्षा के समय के बाद भी छात्रों के प्रश्नों का उत्तर दे सकते है, यह शिक्षक को छात्रों के विकास को अधिक गहनता एवं सूक्ष्मता से समझने में सहायता करता है।

10. सोशल मीड़िया के माध्यम से ऑनलाइन उपलब्ध अधिगम सामग्री छात्रों के ज्ञान को पोषण प्रदान करती है। इसके माध्यम से छात्र प्रसिद्ध शिक्षकों, विद्धानों, प्रोफेसरों, को लाईव प्रक्रियाओं के माध्यम से देख सकते है। उनकी समीक्षाएँ देख सकते है, ब्लॉग पढ़ सकते है। इससे शिक्षण अधिगम में रोचकता आती है।

नाकारात्मक प्रभाव

सोशल मीड़िया पर छात्र अधिक समय बर्बाद करते है, वे शिक्षण अधिगम से अलग समसामयिक विवादों अथवा अवांछित सूचनाओं को अधिक महत्व देने लगते है, जिस कारण वे अपने जीवन की वास्तविकता से विचलित होते जा रहे है।

1. सोशल मीड़िया पर निर्भरता बढ़ने के कारण छात्रों की सृजनशीलता और अधिगम प्रक्रिया मन्द हो रही है।
2. इसके उपयोग के कारण छात्रों का सम्प्रेषण कौशल विकृत हो रहा है, क्योंकि वे आमने–सामने की अर्न्तः क्रिया की अपेक्षा स्क्रीन पर अधिक समय व्यतीत कर रहे है।
3. सोशल मीड़िया पर छात्र अध्ययन कम तथा चैटिंग अधिक कर रहे थे।
4. सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर प्रसारित सूचनाओं की भाषा व उसकी अश्लीलता, अशिष्टता छात्रों के लिए उचित नहीं होती है।
5. अधिकांश अकादमिक विचारकों का मत है कि सोशल मीड़िया छात्रो की शिक्षा के प्रति रूचि, एकाग्रता एवं परिश्रम को विखण्डित कर रहा है। जिस कारण छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति, विषय के प्रति गहन दृष्टि, ज्ञान एवं अधिगम में कमी आ रही है।

निष्कर्ष

सोशल मीड़िया ने समाज को आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित किया है विशेष रूप से ज्ञान के प्रसार में इसने क्रान्तिकारी रूप से परिवर्तन किया है। *ब्रोक्स (2019)* ने उल्लेख किया है कि सोशल मीड़िया से ज्ञान प्राप्त करने से बचना कठिन है, विशेष रूप से तब जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोगकर्त्ता की अभिरूचि समाचार अपडेट, सूचना आदि की ओर झुकी हो। लेकिन सोशल मीड़िया प्लेटफॉर्म बेहद विखण्डित है। इससे ज्ञान प्राप्त करना इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति सोशल मीड़िया पर कितने समय का उपयोग कर रहा है और सोशल मीड़िया एकाउंट समसामायिक मामलों, शैक्षिक सामग्री और अन्य सूचनाओं से कितने संतृप्त है। लोग सोशल मीड़िया से सीख सकते है, लेकिन तभी जब वे योग्यता रखते हो और उनके एकाउंटस इसी प्रकार के लिक्स और मित्रों से जुड़े हो अन्यथा सोशल मीड़िया अप्रमाणिक सूचनाओं के जाल में फंसाकर रख देता है।

व्यक्ति किसी भी मंच अथवा माध्यम से सीख सकते है, लेकिन ज्ञान प्राप्त करना सूचनाओं की उपलब्धता और सूचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए आन्तरिक अभिप्रेरणा पर निर्भर करता है। इसलिए सोशल मीडिया से सीखने की सम्भावना उन लोगों में अधिक होती है जो इन क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त करने के लिए आन्तरिक रूप से अभिप्रेरित होते है। छात्रों द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से सीखने में भारी वृद्धि हुई है, वे अपने मित्र समूह, वेबसाइटस अथवा शैक्षिक जगत के प्रसिद्ध कोचिंग संस्थानों के ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से सीख रहे हैं। शैक्षिक दृष्टि से सोशल मीड़िया का यह

सबसे बड़ा योगदान है। परन्तु यह भी सत्य है कि सोशल मीड़िया का अत्यधिक उपयोग उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं उपलब्धता को विचलित कर रहा है। अपने नाकारात्मक स्वरूप में सोशल मीड़िया *'डिजिल महामारी'* के रूप में सामने आया है। यह सभी प्रकार की सूचनाओं को मैसेज, ऑडियों व वीडियों के माध्यम से तीव्र गति से आश्चर्यजनक रूप से प्रसारित करता है। यद्यपि यह कार्य टीवी के आने के बाद पहले से ही होता रहा है, परन्तु वह औपचारिक व नियन्त्रित रूप से सूचनाओं को प्रस्तुत करता है, जिस पर परिवार के अन्य सदस्यों की भी नजर रहती है। परन्तु सोशल मीड़िया इस दृष्टि से अधिक प्रभावी इसलिए है कि यह स्मार्टफोन के द्वारा व्यक्तिगत रूप से अपुष्ट, अनियन्त्रित एवं अप्रमाणित सूचनाओं को किसी भी समय साझा करने की क्षमता रखता है। सोशल मीड़िया विश्व की बड़ी तकनीकी कम्पनियों द्वारा जिन्हें *'बिग टेक'* कहा जाता है, द्वारा जिस प्रकार से संचालित किया जाता है उसको नियन्त्रित करना किसी एक राष्ट्र के बस की बात नहीं है। यद्यपि इस दिशा में प्रयास किये जा रहे है परन्तु इसमें अभी समय लगने की सम्भावना है। सोशल मीड़िया पर नियन्त्रण न होने का संकट किसी भी समाज अथवा राष्ट्र के लिए वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या है। क्योंकि राष्ट्र विरोधी असामाजिक, अपुष्ट एवं अप्रमाणित सूचनाओं के प्रसार द्वारा सोशल मीड़िया हजारो वर्षों के क्रम में विकसित सामाजिक मूल्यों, नैतिकता, आदर्शों, परम्पराओं के साथ–साथ संस्कृति को भी विरूपित करने की सामर्थ्य रखता है। भविष्य में शिक्षा एवं समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव किस दिशा में और कितना होगा इसका अनुमान लगाना कठिन है पर इतना अवश्य कह सकते हैं कि यह तो अभी शुरूआत भर है जहाँ इस 21वीं सदीं का आविष्कार *'सोशल मीड़िया'* अभी इस सदी के पूर्वाद्ध में अपने *बाल्यवस्था* में है *'आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्सी'* के सहयोग से यह अपनी *'किशोरावस्था'* में आने को तैयार है तब इसके प्रभाव भी शिक्षा एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर अधिक गहरे एवं गम्भीर होंगे जो शैक्षिक एवं सामाजिक मूल्यों को विचलित कर सकते हैं।

सन्दर्भ

1. दुबे, पी0 (2021), युवाओं में सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव का अध्ययन सम्पादकीय आलेख, दैनिक जागरण, जनवरी, 2024.
2. सोशल मीडिया पर लगाम का संकट, सम्पादकीय, दैनिक हिन्दुस्तान, नवम्बर, 8, 2021.
3. सोती, डी0के0 (2022), सोशल मीडिया राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नया खतरा, सम्पादकीय, आलेख, दैनिक जागरण, अक्टूबर, 2023.
4. दयाशंकर, एस0एस0 (2023), अल्फा पीढ़ी और डिजिटल महामारी के खतरे, सम्पादकीय, आलेख, दैनिक जागराण, अगस्त, 2023.
5. चतुर्वेदी, जे0 (2013), ज्ञान क्रान्ति और साइबर संस्कृति, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली.
6. कुमार, आर0 (2009), इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं साइवर संचार, नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली.
7. https://www.orfonline.org/hindi/research/the-need-and-challenges-of-online-education-in-covid-19-era/

8. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-anlysis/centre-to-online-education
9. https://thewirehindi.com/122150/covid-19lockdown-online-classes-higher-education/
10. https://www.patrika.com/opinion/is-online-education-effective-in-india-6514881/